

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ११६३ घ

Title प्रश्न ज्ञानम् प्रश्न संग्रहम्

Author

Extent १४ पत्राणि Age

Subject ज्योतिषम्

प्रश्नज्ञानम् प्रश्नसंग्रहम्

✓ ११ म३

११

7.99.13-5-

500 3/4 1/2 1/4 1/8 1/16 1/32 1/64 1/128 1/256 1/512 1/1024 1/2048 1/4096 1/8192 1/16384 1/32768 1/65536 1/131072 1/262144 1/524288 1/1048576 1/2097152 1/4194304 1/8388608 1/16777216 1/33554432 1/67108864 1/134217728 1/268435456 1/536870912 1/1073741824 1/2147483648 1/4294967296 1/8589934592 1/17179869184 1/34359738368 1/68719476736 1/137438953472 1/274877906944 1/549755813888 1/1099511627776 1/2199023255552 1/4398046511104 1/8796093022208 1/17592186044416 1/35184372088832 1/70368744177664 1/140737488355328 1/281474976710656 1/562949953421312 1/1125899906842624 1/2251799813685248 1/4503599627370496 1/9007199254740992 1/18014398509481984 1/36028797018963968 1/72057594037927936 1/144115188075855872 1/288230376151711744 1/576460752303423488 1/1152921504606846976 1/2305843009213693952 1/4611686018427387904 1/9223372036854775808 1/18446744073709551616 1/36893488147419103232 1/73786976294838206464 1/147573952589676412928 1/295147905179352825856 1/590295810358705651712 1/1180591620717411303424 1/2361183241434822606848 1/4722366482869645213696 1/9444732965739290427392 1/18889465931478580854784 1/37778931862957161709568 1/75557863725914323419136 1/151115727451828646838272 1/302231454903657293676544 1/604462909807314587353088 1/1208925819614629174706176 1/2417851639229258349412352 1/4835703278458516698824704 1/9671406556917033397649408 1/19342813113834066795298816 1/38685626227668133590597632 1/77371252455336267181195264 1/154742504910672534362390528 1/309485009821345068724781056 1/618970019642690137449562112 1/1237940039285380274899124224 1/2475880078570760549798248448 1/4951760157141521099596496896 1/9903520314283042199192993792 1/19807040628566084398385987584 1/39614081257132168796771975168 1/79228162514264337593543950336 1/158456325028528675187087900672 1/316912650057057350374175801344 1/633825300114114700748351602688 1/1267650600228229401496703205376 1/2535301200456458802993406410752 1/5070602400912917605986812821504 1/10141204801825835211973625643008 1/20282409603651670423947251286016 1/40564819207303340847894502572032 1/81129638414606681695789005144064 1/162259276829213363391578010288128 1/324518553658426726783156020576256 1/649037107316853453566312041152512 1/1298074214633706907132624082305024 1/2596148429267413814265248164610048 1/5192296858534827628530496329220096 1/10384593717069655257060992658440192 1/20769187434139310514121985316880384 1/41538374868278621028243970633760768 1/83076749736557242056487941267521536 1/166153499473114484112975882535043072 1/332306998946228968225951765070086144 1/664613997892457936451903530140172288 1/1329227995784915872903807060280344576 1/2658455991569831745807614120560689152 1/5316911983139663491615228241121378304 1/10633823966279326983230456482242756608 1/21267647932558653966460912964485513216 1/42535295865117307932921825928971026432 1/85070591730234615865843651857942052864 1/170141183460469231731687303715884105728 1/340282366920938463463374607431768211456 1/680564733841876926926749214863536422912 1/1361129467683753853853498429727072845824 1/2722258935367507707706996859454145691648 1/5444517870735015415413993718908291383296 1/10889035741470030830827987437816582766592 1/21778071482940061661655974875633165533184 1/43556142965880123323311949751266331066368 1/87112285931760246646623899502532662132736 1/174224571863520493293247799005065324265472 1/348449143727040986586495598010130648530944 1/696898287454081973172991196020261297061888 1/1393796574908163946345982392040522594123776 1/2787593149816327892691964784081045188247552 1/5575186299632655785383929568162090376495104 1/11150372599265311570767859136324180752990208 1/22300745198530623141535718272648361505980416 1/44601490397061246283071436545296723011960832 1/89202980794122492566142873090593446023921664 1/178405961588244985132285746181186892047843328 1/356811923176489970264571492362373784095686656 1/713623846352979940529142984724747568191373312 1/1427247692705959881058285969449495136382746624 1/2854495385411919762116571938898990272765493248 1/5708990770823839524233143877797980545530986496 1/11417981541647679048466287755595961091061972992 1/2

7. 99 25

प्र.
१

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ प्रसन्नानं लिख्यते ॥ ॐ चरे
लगे चरे सूर्ये चर राशि शशी भवेत् ॥ तदा सिद्धिर्भवेत्
न वक्तव्यं गणकोत्तमैः ॥ चरे लगे चरे सूर्ये स्थिर रा
शि शशी भवेत् ॥ सिध्यं चैव न वक्तव्यं शुभं च भविष्य
ति ॥ २ ॥ स्थिर लगे द्विस्वभावे राशि सूर्य यदा भवेत्
जाया प्रसन्नमवाप्नोति सिध्यं सौख्यं सदा सुखं ॥ स्थि
र लगे द्विस्वके सूर्ये चरे चंद्र प्रकीर्तिता ॥ कलि शरी
रं चिंता च धन हानिश्च निश्चयेत् ॥ ४ ॥ स्थिर लगे च
रे सूर्ये स्थिर चंद्र विधीयते ॥ मित्रं वंधुर्विनाशं च स्त्री
सौख्यं न वात्मनः ॥ स्थिर लगे चार्के च द्विस्वभावे निशा

करे॥ सर्वसौख्यं महासिद्धिर्लाभं हृदयतागमं ६
स्थिरलग्ने चरे सूर्ये शशी याति च राशये॥ भार्गव
स्यानभृष्टं च स्वजनैः सह मत्सरैः॥ ७॥ द्विस्वभाव
भवेत्लग्ने सूर्यस्तत्र चरे शशी॥ अशुलाभं तथा स्या
नः स्वजनैः सह संपदा॥ ८॥ द्विस्वभावे जदालग्नौ च
राकं द्विस्वगेशशी॥ खेतलाभं मनः सांति विद्याला
भं यतागमं॥ ९॥ द्विस्वभावे पुलग्नेषु सूर्यो वा स्थिर
राशिषु॥ द्विस्वभावे मृगां कश्च पुत्रमित्पुरुषद्वयं॥ १०॥
चरलग्ने स्थिरे सूर्ये चंद्रमा स्थिरमेव च॥ कार्यभृष्टं
नशोभे च विग्रहा च पदे पदे॥ द्विस्वभावे पुलग्नेषु

प्र.
२

चंद्रसूर्यचराचरो। लाभयोगं विजानीयात् मनसौख्यं
सदासुखं॥१२॥ चरलग्ने चरे सूर्ये स्थिरभावे च चंद्र
मा॥ चनसिद्धिर्विजानीयात् भयमुद्देगसंभवं॥१३॥
चरलग्ने स्थिरे सूर्ये चरभावे यदाशशी॥ तदा ला
भं धनं धान्यं वृद्धिभावं चंद्रस्थिते॥१४॥ चरलग्ने हि
स्वसूर्ये चरचंद्र स्पृश्यते॥ वांघवानां महाक्लेशं
महाडः खमहद्भयं॥१५॥ स्थिरलग्ने हि स्वगे सूर्ये
स्थिरवाचंद्रमेव च॥ नष्टं चलभ्यते किंचित् वांघमो
क्षं चिराद्युषं॥१६॥ स्थिरलग्ने स्थिरे सूर्ये चंद्रमा स्थि
रमेव च॥ सर्वकार्ये भवेत्सिद्धिः धनधर्मप्रवर्तते

स्थिरल्लग्नैर्हि स्वभावेर्के स्थिरचंद्रप्रकीर्तिते। राज्ञो
पार्श्वेयनं प्राप्ते सर्वसौख्यं न संशयः॥१८॥ चरल्लग्नै
र्हि स्वभेस्सूर्येर्हि स्वभावेषु चंद्रमः॥ बंधनं द्रव्यना
शं च चित्तोद्देशकारकः॥१९॥ हि स्वभावैव रात्रिं
चरार्कस्थिरचंद्रमा॥ महालाभं महासौख्यं यशः
सौभाग्यं संपदा॥२०॥ हि स्वभावैस्स्थिरल्लग्नैर्के स्थिर
चंद्रप्रवर्तिते। हानसौख्यं न कल्याणं न च सिद्धिर्न च
रिधिः॥२१॥ स्थिरेल्लग्नैस्स्थिरेस्सूर्येर्हि स्वभावे निशा
करे। हि पदं च चतुष्पदं हानिव्याधिः क्षत्रययं॥२२॥
हि स्वभावे यदाल्लग्नैस्स्थिरेवारविचंद्रमा॥ सर्वसौ

प्र.
३
३
स्व

ष्यंचलाभंचलाभयोगंयदाफलं॥चरलग्नेस्थिरेसूर्ये
द्विस्वभावेषुचंद्रमा॥मध्यमंचविजानीयात्फलंसि
द्धिर्नदृश्यते॥२४॥स्थिरलग्नेस्थिरेसूर्येचरेचंद्रप्र
वर्तिते॥राज्यसृज्यंचलाभंचसर्वकर्ममहोक्तं २५
चरलग्नेद्विस्वगोसूर्येस्थिरराशिगतेशशी मध्य
मंतुविजानीयात्फलंसिद्धिर्नदृश्यते॥स्थिरलग्ने
द्विस्वगोसूर्येद्विभावेषुचंद्रमा॥सिद्धिसौख्यनचा
द्वेगःरिद्धिसंस्फुरताप्रवे॥२७॥द्विस्वभावश्चल
गश्चद्विस्वभावेरविशशी॥शकुनंनशुभंचैवहा
निउद्धेवकारकं॥२८॥चरलग्नेचरेसूर्येद्विस्व

भावेचचंद्रमा । दोमसौष्यं महासिद्धिं पुत्रवृद्धि
नागसं ॥ २९ ॥ द्विस्वभावेचलग्नस्यः स्थिरार्कः च
रेचंद्रमा ॥ आगमं श्रीसिद्धं च सर्वसौष्यं न संश
यः ॥ ३० ॥ इति प्रसन्नज्ञानसमाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ सरस्वतीये नमः ॥ ॐ अथ प्रसन्न
संग्रहलिखते ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः स्तुत्यगुरुं श्रीगि
रिजापतिं ॥ देवज्ञानं हितार्थाय कृतो वै प्रसन्न संग्र
हः ॥ १ ॥ सभायां प्रसन्नं न कर्तव्यं कुटिलानां तथा नि
शि ॥ तावद्भावे अविश्वस्यत्वरितान्त्रवदेत्कचित्

प्र.
४

फलप्रप्युतोसौ हि देवज्ञं परिष्टुक्कति॥ तस्यैव क
थयेत्प्रसंसत्यो भवति नान्यथा॥ आदौ चिंता परि
ज्ञानं कृत्वा प्रसं विचारयेत्॥ चोमहृष्टिर्भवेज्जी
वो मूलं भस्म्यावलोकने॥ समावलोकने पात
श्चिंतायाः लक्षणं स्मृतं॥ शिरः स्पर्श जीवचिंता
पादस्पर्शं तु मूलकं॥ नाभिस्पर्शं पातचिंता विज्ञे
या सर्वदा बुधैः॥ स्पर्शं हृत्त्रैललाटे च जीवचिंता
अभप्रदा॥ हृदोदरकं स्पर्शं पातचिंता तु मध्य
मा॥ गुह्यो रुष्टश्च भागे च प्रथमं मूलचिंतने जा
तुं ज्ञेयापदे जीवपातमूलनिरूपणं॥ सर्वस्या

पातचिंतास्याज्जीवंददिणतस्तथा । उत्तरस्याप
 श्रिमायां मूलचिंता भवेद्दुःखाः ॥ प्रस्तादरं द्विगुणि
 तमेकेन च समन्वितं ॥ वाङ्मिभश्च हरेद्भागं शेषं चिं
 तां विनिर्दिशत ॥ विष्णो के जीवचिंता समे पातप्र
 कीर्तिता ॥ शून्ये मूलं विजानीया चिंतायां लक्षां स्म
 तं ॥ अथ सृष्टिचिंता ॥ तिथिप्रहसंयुक्ता तारका
 वारमिश्रता ॥ नवभिश्च हरेद्भागं शेषं केवलादि
 शत ॥ ताम्ना १ मुक्तिसदृशो २ श्वेतमिश्ररक्तश्च ३ द
 र्वासदृशो वर्णो ४ ॥ सुवर्णवर्णो ५ मोक्षिकसदृश
 अदृशमवर्णो ज्ञेयो ७ ॥ आरक्तो नीलमिश्रिताश्च

प्र.
५

तः ऽ नीलोरक्तवर्णो ऽ ज्ञात्वाविविधो वदेद्दणं ॥ १४ ॥
प्रस्तादरद्विगुणितमष्टभिश्च विमिश्रितं ॥ नवभि
श्च हरेद्भागं शेषे तत्कालिको ग्रहः ॥ १५ ॥ ग्रहो परि
वदेत्सम्पत्कार्यादिलक्षणां स्मृतं ॥ आदित्ये नैव
सिद्धिः स्यात्सोमे सिद्धिः प्रजायते ॥ भौमे तु मरणं ते
यंगुरुशुक्रबुधाः शुभाः ॥ शनैश्चरे नाति सिद्धिः राहु
केतौ तथैव च ॥ १६ ॥ आदित्ये मासमेकं तसोमे तु विं
शतिदिनैः ॥ एकोनविंशतिर्जीवे भृगो विंशति वा
सरे ॥ शनैश्चरे चैव वर्षे राहुकेतौ रपि स्मृतं ॥ १७ ॥
अथ जीवधात्वादिलक्षणां ॥ प्रस्तादरद्विगुणित

मष्टभिश्चविभिश्चतं । नवभिश्चहरेद्भागंशेषंतात्कालकाग्रहः ॥ ग्रहोपरिवदेत्सम्पक्पातमल्लादिल्ल
दां ॥ चंद्रेऽङ्केतथाजीवेजीवचिंतांविनिर्दिशेत्
भानौबुधेतथाकेतौयात्रचिंतांवदेदुधाः ॥ कुजा-
र्किराहुविज्ञेयामल्लचिंतामनौषिभिः ॥ रक्तश्या
मोभवेत्सूर्याशानीगौरः प्रकीर्तितः ॥ कृत्वाशने
श्वरोज्ञेयोविषश्चोर्विपुंतया ॥ केतुकार्बुरवर्णाः
स्याद्वाहुवर्णांस्तंतंबुधे ॥ यात्रविनिश्चयोज्ञेयोग
हपातंवदेदुधः ॥ अङ्केचंद्रेभवेद्रोपंबुधेस्वर्णा
मुदाहृतं । गुरोरत्रपुतंहेमं सूर्यमोक्त्तिकमुच्यते

प्र.
६

भौमेतामंशानौलोहं राहोरोप्यायसंस्मृतं॥ केतौक
र्षुरपातः स्यात्स बुध्यापातनिर्णयः॥ इति पातः॥
चंद्रेशुकेशुलावल्लीलतावृक्षो बुधस्पृच॥ पत्रं गुरो
फलं सूर्ये मूलं चरविजेति च॥ इति मूलं॥ हि पदो
भार्गवगुरुभूमिजाकौचतुष्यदो॥ यद्विणो बुधशो
रीचचंद्रराहुसरीरूपौ॥ इति जीवः॥ अथ नष्टव
स्तज्ञानं॥ चंद्रसूर्यो वदेत्याद्या जीवेशुकेशुकेचपश्चि
मे॥ उत्तरे भौमसौम्याभ्यां शनि राहो च दक्षिणे अ
थ वर्गोपरि चिंताज्ञानं॥ अवरं आत्मनश्चिंतापरि
चिंताकवर्गके॥ तथा च वर्गं विज्ञेयाह वर्गस्या

त्मनः सुतः ॥ तवर्गे ॥ स्यात्त्मनो नित्यं यवर्गे परजा-
स्मृतः ॥ तद्देवयवर्गे स्यात् शवर्गे स्यात्त्मनः पुनः
श्रवर्गे हि पदाज्ञेया कवर्गे च चतुष्पदा ॥ चवर्गे पा-
दवकुलाश्रपदा तृठवर्गके ॥ तथा तवर्गे विज्ञे-
या यवर्गे पादसंकुला ॥ चतुष्पदा यवर्गे तृशवर्गे
हि पदा स्मृताः ॥ देवाश्रवर्गे विज्ञेया कवर्गे मनु-
जः स्मृतः ॥ चवर्गे पक्षिणाज्ञेया तृठवर्गे तद्देव-
हि ॥ नरास्तवर्गे विज्ञेया यवर्गे श्रवर्गः स्मृतः
यवर्गे मनुजाश्चैव तथैव च शवर्गके ॥ श्रवर्गे
ब्राह्मणः शूद्रः कवर्गे क्षत्रिया स्मृतः ॥ वैश्य

प्र.

अवर्गे विज्ञेयाः ऋतुवर्गे मूद्रजातया ॥ अन्त्यास्तवर्गे वि-
ज्ञेयाः पवर्गे तद्वदेव हि ॥ मूद्रायवर्गे जातव्याशवर्गे
वैश्या एव हि ॥ स्त्रीचिन्ता च अवर्गे स्यात्कवर्गे प्रहृषो
मतः ॥ नृपुंसकश्च अवर्गे स्यात्तद्वदेव हि ॥ त-
वर्गे प्रहृषो ज्ञेया स्त्रीयवर्गे स्मृतः बुधैः ॥ षडं पवर्गे
विज्ञेयं शवर्गे तद्वदेव हि ॥ अथ मम वर्षे स्मिन् न किं
फलं तत् कथ्यते ॥ तिथिवारदीयोगानां पुति संव-
त्सरा निता ॥ प्रष्टुर्नामाक्षरैर्भुक्ता विहृतः शेषकं
फलं ॥ एकेनैकेषां तास्मृताः ॥ इह भ्यां हितये च स-
खे ॥ अथ राजक्रियाचिन्ताः ॥ प्रसवणिगुणौ हन्यात्

वहीभिर्भुक्तवद्भिस्त॥ एकेन स्वल्पमानः स्यात्
द्वाभ्यां मानाधिकं भवेत् ॥ शून्यशेषेन मानं स्यादि
त्येतत्प्रसूलदाणं ॥ अथाऽद्यगजो ह प्राप्तिस्तदा
णं ॥ स्वर्णाः त्रिगुणाः कार्या वस्तुवर्गैर्विचरूपयु
क् ॥ द्विहृतं शेषजं ज्ञेयात् समे प्राप्तेन्यथा समे ॥ अ
थ रोगनिर्मुक्तप्रसं ॥ तिथिनाडीसमायोगोद्वाभ्यां
गुणितवेदयुक् ॥ वद्भिभिर्भीजतेशेषफलंतस्य
प्रकीर्तितं ॥ एकेन तिपन्नाभावश्चिररोगी द्विशेष
के ॥ शून्येन तिपन्ने ज्ञेयं शेषतः सर्वदा बुधैः ॥ अ
थ द्रव्यप्राप्तिर्भवति न वा ॥ चटिकारामगुणितान्त

दशांदाभागदेवेजावाकीरहेउतनेदिनात्कृष्णकहे

प्र.
८

द्वौर्मिश्रताशरै॥वेदैर्विहृतिशेषंचेदोजेप्राप्तिर्न
चान्यथा॥अथःमुक्ताप्राप्तिर्भविष्यतिनवा॥प्रभो
नामगुणौहंन्यातवौर्मिश्रतंहरेत्॥सामैःप्राप्तिर्वि
जानीयात्एकशेषेद्विकेनहि॥चिरकालेष्टून्यशे
षेद्रव्यप्राप्तिर्भविष्यति॥अथकिंपद्रव्यप्राप्तिः॥त
न्नामवर्णसंख्यायाहृतानादैर्द्युताशरैःसप्तभिः
अहरेद्भागंशेषदशकास्मृताः॥लवंपंचगुणं
कार्यंदशकेभ्योविशोपयेत्॥प्राप्तिस्तच्चभवेत्तज्ज्ञे
यंबुधैर्मानानुसारितः॥अथबंधप्राप्तिप्रस्तुतिंता
द्यदीभिलिपिसंयुक्ताविभिर्भागसमाहरेत्॥

एकशेषे भवेत्सिद्धिर्द्विशेषे वदु यत्नता । अन्यशेषे
न सिद्धिः स्यादेतत्प्रसक्तदातां ॥ अथ संतानचिं
ता ॥ चतुर्गुणातिथिः सैकामिप्रितावारयोगकैः
द्वाभ्यां भागेन यल्लब्धं विद्मं वेदहते च यत् ॥ एक
शेषे विलंवे न द्विशेषे नैव संभवः ॥ अचिरेणैव का
लेन विचतः शेषके वदेत् ॥ अथ अस्या गर्भास्ति न
वा ॥ वारस्त्रिगुणिता कार्यस्तिथिभिश्चैव संयुतः ॥
द्वाभ्यां भक्तं च यच्छेषं समेनास्त्यः समेफलं ॥ अथा
न्यच्च ॥ प्रसवार्णं कमात्रं कयातः सप्रहृतो यत् ॥ वि
षमे गर्भसंभूतिः समेनास्ति वदेद्भुवं ॥ अथ पुंस्त्री प्रसं

प्र.
५

प्रसवार्णिकमात्रकतिथिवारदीसंयुतं॥समभक्ता
चशेषेसमेस्त्रीविषमेषुमान॥अथान्यच्च पुत्रकं
न्याप्रसं॥तिथिवारदीयोगानां नामाक्षरैर्युतस्तथा
दितिजेनयुतश्चापिवन्निहतशेषजंफलं॥एक
शेषेभवेत्पुत्रोद्वाभ्यांकन्याविनिर्दिशेत्॥विशेषे
गर्भपातः स्यात्तद्वावयंसर्वदाबुधैः॥अथात्मनोऽन्य
स्यवाप्रसं॥योगपंचगुणाकार्येवारेणापिनियो
जयेत्॥गर्भेर्भक्तश्चयत्नेषमेकः स्वात्मनोद्वास्म
तः॥द्वाभ्यमन्यद्विजानीयोऽत्रिशेषवीर्यसंयुतः॥
अथदुर्गप्राप्तिर्भविष्यतिनवाप्रसं॥गर्भेर्गुणित

वारैस्तनक्षत्रैर्योजिनास्त्रिहृत ॥ उर्गप्राप्तिरेकशे
 षेद्विकेसंक्षिप्तिकेनहि ॥ अथपरचक्रागमचिंता
 यदिकापंचभिर्गुणपादिनक्षत्रविश्वसंयुतं ॥ द्वाभ्यांभा
 गोत्तयच्छेषंफलतस्यवदाम्यहं ॥ एकेनागमनंवि
 द्यात्द्वाभ्यांनैवागमोभवेत् ॥ अथाऽमुकशामाताग
 मिष्यतिनवाप्रसं ॥ देशनामक्षयोर्योगएकहीनस्त्रि
 भिर्भजेत् ॥ एकशेषेत्तुष्टेनआगमिष्यतितिश्चि
 तं ॥ पलायनंचतस्यतस्यात् देशमुक्तिद्विशेषके
 विशेषकेभवेडः ॥ त्रिष्टुहंसैत्याद्योमहान् ॥ अथ
 चयोर्युद्धेकस्यजयेतिप्रसं ॥ उभयोस्त्रिगुणानाम

प्र.
१०

तात्कालतिथिना द्रष्टुं क॥ यन्निह घटशेषं स्याद
धिकं जयकृद्भवेत्॥ अथ भयसंवेधि निर्गमप्रस
दिननक्षत्रसंयुक्तं जन्ममं वेदहृत्किल॥ विद्मं ह्य
भ्यां हतं शेषं पंचद्वं विहृतं फलं॥ एकैतन्निर्भयं
श्रूयात् ह्यभ्यां द्रव्येन च॥ शून्ये च विरकाले न ज्ञ
यात्केवलता त्वता॥ अथ गंतव्यं चिंता॥ तिथिवारद
योगानां योगो रामयुतस्तथा॥ द्विगुणो वन्दिभि
र्भक्तं शेषेन फलमादिशेत्॥ एकैतन्गमनं या
ति ह्यभ्यां च स्थिरता भवेत्॥ शून्येन विरकाले
न श्रुतिगंतव्यं लक्षणे॥ अथ हतं श्रुतिगंतव्यं॥

तिथिस्त्रिगुणिताकार्यापंचवारंचमिश्रता॥सम।
 भिर्युणिताकार्याद्वाभ्यांशेषेफलंभवेत्॥एकेन
 चलितोद्भूतमूल्यात्तन्निश्चलःसदः॥अथहृत
 कियत्सार्गवर्तते॥प्रसवार्णिकमात्रं कयोरौद्वा
 भ्यांहतोत्तिष्ठक॥वस्तुभिश्चहरेद्भागंशेषांके।
 फलमादिशेत्॥एकेनसंस्थितस्तत्रद्वितीयेमा
 र्गमाश्रिता॥तृतीयेचाहंभागेतत्रार्थगामसन्नि
 धौ॥पंचमेषुनरावृत्तिःषष्ठेव्याधिसमाकुला॥
 सप्तमेचाग्रहेजेयाचाष्टमेचौरसंकुलाः॥अथ
 अर्गलाजान्निर्गमः॥प्रभुस्वनामयोरैकोद्विनि

प्र.
११

अंतरैर्युतं विभिर्विभक्तशेषांकेफलं ह्युक्तु।
भाषुभं एकेनचिरकालेनद्वितीयेवद्वकालिता
मून्ये शेषमहाडः खविनाद्रव्येनमुंचतिः॥ अथो
पलवचिंतः॥ नक्षत्रविशुणं कार्यंतिथियुक्त्रिह
तंफलं॥ स्वल्पः समोपि कोज्ञेयो एकद्वित्रिश्चशेष
के॥ अथनष्टप्राप्तिचिंता॥ प्रसन्नद्वैस्त्रिभिर्गुण्य
तात्कालवटिकान्विता॥ इभ्यांभक्ताविकशेषेप्रा
प्तिवाच्यादिकेनहि॥ वस्त्वक्षरगुणयोगःस्त्रियु।
तापंचहृतया॥ एकेनस्वर्गहेज्ञेयाद्वितीयेचहि
रेवच॥ तृतीये शयनागारेचतुर्थे स्थाने सन्निधौ

पंचमेतविनोदेन हृतं तेनैव बुध्यते । अथदि कज्ञानं
 पूर्वापरे च सर्वस्यादक्षिणोत्तरयोत्ररा ॥ अग्निवायुदि
 शोर्मध्यस्य च विशेषतः ॥ तोयोत्तराचयहृष्टो ।
 स्थितासुत्तरवदेन्ध्रुवं ॥ पूर्वोत्तरायां च वदेत्तत् सर्व
 वस्याविचारणात् ॥ अथवार्त्ताप्रसं ॥ वारह्ययोगयो
 र्गच तिथिर्लोवेदशुक्रविहृतं ॥ सत्यैकेन तथा मि
 ष्याद्वाभ्यां शेषत्रयं यदा ॥ तदादौ सत्यतायां तिथश्चा
 निमिषा भवेन्ध्रुवं ॥ अथमैत्रीचिंता ॥ तिथिवारह्ययो
 रास्ता प्रभुर्नाम हतास्त्रिभिः ॥ युक्तस्याभाजितोद्वा
 भ्यामेकेमैत्रीद्विकेन हि ॥ अथयतनचिंता ॥ तिथि
 योगाहतिः कार्या संज्ञा तेदिनयुक् हृतं ॥ द्वाभ्यां शेष

प्र.
१२

धेयल्लभ्यं गुणिनीयं विभिर्हृतं एकशेषेन पतनं हि
शेषे शीघ्रमेव च ॥ विशेषे विरकालेन ज्ञातं च सर्व
दावुधैः ॥ अथ मृत्युजीवनं प्रसूतः ॥ उदयात् चटि
का विघ्नातिथि वारेण संयुता ॥ सूर्यश्च विभजेद्दी
मान् विज्ञेयं मृत्युजीवनं ॥ वन्ही ३ वाण ५ र स द
सिद्धि ८ भेद ९ रुद्र ११ अजीवनं रूप १ पक्ष २ युग ४
हीप ७ दश १० सूर्ये १२ न जीवति ॥ अथ वृष्टिप्रसू
ता कालवृष्टिकादिघ्ना विहृतैकेन सत्वर ॥ द्वाभ्यां
किंचिद्विलंबे स्याद्गामद्वारेति वृष्टि कृत ॥ अथाऽ
सुकस्य मिलनं भाविष्यति न वा ॥ वृष्टिका विगुणा
सैका सप्तभिः संयुतः पुनः ॥ चतुर्भिर्भाजिते तत्र

शेषांकेफलमादिशत॥ एकशेषेचमित्तनंदिशेषे
गमनंतरे॥ विशेषदर्शनाभावान्मृत्युत्केशक
इवेत॥ अथकुवेदर्शनं॥ तिथिवारक्षयोगानांयो
गेद्वाभ्यांहतिस्त्रिभिः॥ युक्ताद्वादशभिर्भाज्याशे
षेणफलमादिशेत्॥ हास्ययुक्तास्थितोभस्यास्व
स्थःसेवयुतेर्जनैः॥ तां वृत्ताद्युपचारैश्च एकशेष
स्तदाभवेत्॥ आपासेनचसेनयुक्तः॥ आपामनुर्थे
युक्तः॥ उद्धेगवार्ताश्रवाणां द्विशेषेदशानंफलम
कुपितास्वासनस्यापिताउनेबुद्धिसंभवा॥ पश्चा
त्कार्यप्रसंगेनगमनंचविशेषके॥ वेदशेषेत्तसु

प्र.
१३

मः स्याज्जलेन करशुद्धितां पंचशेषे तु सप्त स्यात्
सप्तोत्पितो भोजनं चरेत् रसशेषे मांसमप्येदर्श
ने निश्चितं भवेत् स्त्रीभागे व्यवहारश्च सप्तशेषे
वितिदिशेत् अष्टशेषे यदा दृष्टे धर्मकार्येषु तत्प
रः दशशेषे राजपमानं रुद्रो भोजनमेव च द्वाद
शः शिवो ज्ञेयाः स्त्रीभागे कर्तुमिच्छति अथ
कार्या विधिप्रसन्नः तिथिवारक्षयोगस्तत्रिंशः
षड्विंशतस्तथा श्रुक् १२ विभजेद्भागं शेषां के
फलमादिशेत् एकं न पक्षं हि शेषेन मांसं क
तस्त्रिभिः स्यादयनं च तृभिः दिवा ५ चरात्रा ३

बापिधाम ७ सट्पके १० पलाये ११ निम १२
 देवतानि च ॥ सर्वान्देवात्मकसुखात् ३ प्यफल
 नामं त्रुग्राहयेत् ॥ अपरान्देवसुखात् फलनामं
 त्रुग्राहयेत् ॥ नद्यावादेवमप्यान्देयवतीसुखात्
 फलनामं त्रुग्राहयेत् ॥ त्रिकालज्ञमहेश्वरब्रुहि
 मेहेनामं वा ॥ देवदेवमहादेव त्रिकालज्ञमहेश्व
 र ॥ हे सचक्रस्य प्रकारं मया च सर्वसूचितं ॥ श्रीशि
 व उवाच ॥ हे सचक्रं प्रवक्ष्यामि शृणु त्वं स्वस्य मा
 सने ॥ अकारादिहकारांतवर्णानां ध्रुवकाष्ठ एव
 चर्क १२ प्रकृति १३ शान १४ धृति १५ पंचदश १५ ॥

प्र.
२४

१५

स्तथाजिति २४ रष्टदश १८ रदा ३२ ततः एकोन
विंशतिः १५ तत् २५ विंश १३ भवा ११ एकविंश
तीश श्लोक १३ ॥